तुबारि

www.pangi.in
अब अंग्रेजी, हिन्दी त पंगवाड़ी भाषा अन्तर असी।

Issue 68; 06/10/2017

₹ 5/

बिषय सूची

1. की करण जे जीन्ता? 1
2. कोशिश करणेबाड़ी के 1
3. प्रवचन 2
4. कोठि असी बेरोजगारी? 2
5. चुटकुले 2
6. सच्चाई खोज 3
7. राजा बणणे शिक्षा 3
7. रुपेई 4
8. मेहंगाई की घटाण? 4

की करण जे जीन्ता?

घेई घेन्ता गीहे कना जे रोज थकी हारि कइ।
आज तकर समझ नेईं अओ कि कम करण जे जीन्ता या जीण जे कम कता।
मठड़ियारि सोबि के, घड़ी-घड़ी पुछो सवाल 'बोड़े भोई कइ कि बणणु असु'?
जबाब अब मेओ असा, दुबारी गभुर बणुण।
थकी गो असा तें नौकरी केईआ ए जिन्दगी, खरु भुण असु कि में हिसाब कइ छड़।
दोस्ती केईआ दूर भोई कइ पता लगा, बेशक कन्जूस थिए से, पर रौनक तेन्हि जोई थी।
भरो चनि दुनिये पछाण कराई, त शुन्ड़े चनि अपु तन्के...
जिखेईं लगे रुपेई कमाण त समझ आऊ,
कि शौख त ईये बोउए रुपेई बइ पूरे भुन्तेथ, अपु रुपेई बइ त सिर्फ जरुरते पुरींती।
हसणे मन न भोल तोउं बि हसुण एन्तु।
कोउं जिखेईं पुछियेल 'कि हाल असा'? 'ठीक असा' ईं बोलुण एन्तु।

ए जिन्दगी यक ड्रामा भो दोस्तो, इठ सोबी नाटक करण पड़ता।
तूलि के जरूरत इठि न पड़ती, इठि त मेहणु मेहणु हेर जड़ता।
दुनियें वैज्ञानिक तोपुण लगो असे, कि जोसण पुठ जिन्दगी असी कि नेईं?
पर मेहणु इ नेईं तोपुण लगो कि, जिन्दगी अन्तर खुशी असी कि नेईं।
उघुंण त मरण अन्तर कि फर्क असा? केनि कीं बढ़िया जवाब दिता।

उंघण आधी मौत असी, त मौत नस-भस उंघ असी।
जिन्दगी त अपणेरी तरीके जोई चलती, होरि के सहारे त बमाण उछेईंते।
भ्याग भुन्ति, ब्याद भुन्ति, उम्र यणीं खत्म भुन्ति।
कोई रोली कइ अपु मन बेहलान्ता, होर कोई हस कइ दुख-दर्द नियोकान्ता।
कीं करामत असी कुदरते, जीन्ता मेहणु पुओण बुछ डुबता, त मुर्दा तैरता केता।
जिन्दगी बसी कन्डटरे ईं भोई गो असी, सफर त रोजे असा, पर घेण कुरेह नेईं।
हर सबाले जवाब अउं तोपता रिहा, पर अपु कमरे अन्तर घेन्ते त जवाब मेई गा।
छते बोलु 'उच्चि सोच रखे।' पंखे बोलु 'ठने भोई बिशे'।
घड़ी बोलु 'हर मिन्ट कीमती असा।'
शीशे बोलु 'किछ करण केआं पेहले, अपु मन अन्तर हेरीण दिए।'
गलेजे बोलु 'दुनिया हेरीण दिए।' कलैंडरे बोलु 'हर रोजे पता रखे।'
त दुआरे बोलु, 'अपु मंजिल पाण जे पुरा जोर ले।'
लखीर बि सुआ अजीब भुन्ति, मथे पुठ खिंचिएल त किस्मत बढ़ाई छति।
जिमि पुठ खिंचिएल त सरहद बणाई छति।
चमड़ी पुठ खिंचिएल त लेहु किढ़ छति।
होर रिश्ते अन्तर खिंचिएल त दिवार बड़ाई छति।
यक रुपेई यक लख न भुन्ता।
पर तोउं बि यक रुपेई यक लख केआं निस घियाल त से लख बि न रेहन्ता।
अस तुस तेन्हि लखि दोस्ती बुचा यक सेईए रुपेई भो।

कोशिश करणेवाड़ी के

लहरी हेर डर कइ नाव कदी पार न भुन्ति।
कोशिश करणेबाड़ी के कदी हार न भुन्ति।
मठड़ी टिंझी जपल रो नी कइ हंठती।
हंठती भीती पुठ सौ लिंगि लिशकती।
झड़ कइ चढ़ुण त चढ़ी कइ झड़ुण अखरतु।
अखिर अन्तर कोई मेहनत बेकार न भुन्ति।
कोशिश करणेबाड़ी के कदी हार न भुन्ति।
असफल भुण यक चुनौती भो, मनिण दिए।
हेर-हेर कइ सुधरीण दिए।
जपल तकर सफल न भुओल
त चैन जोई उघण छड़ दिए तुस।
मेहनत करण छड़ दि कइ नशे नउ तुस।
किछ करणे बगैर जय-जयकार न भुन्ति।
कोशिश करणेबाड़ी के
कदी हार न भुन्ति।

प्रवचन

"जे मेह्णु होरी के टीरि अन्तर ऑखु भरते से ईं किस बिश्री घेन्ते कि तेन्हि केईं बि दुई टीर असे।"

आज यक होरी भ्याग तेंई में झोली अन्तर छइ छड़ी हें में मालिखा...हर वक्त तें मुताविक कटुणु, अति कबलियत बि मेन्धे दी छड़।

जिन्दगी मेण त किस्मते बोक भो। मौत भुण त वक्ते बोक भो। पर मरण केईंआ पता बि मेह्णु के दिल अन्तर जीन्ता रेहण, ए कर्मी के बोक भो।

इस दुनिये अन्तर मुश्किल किछ बि नेई। अस से सोब कुछ कइ सकते, जे अस सोच सकते। होर असे से सोब सोच सकते, जे असी आज तकर ना सोचु।

लगातार भुण लगो हारी बेलिए उदास ना भुण चहिए। कपले-कपले गुच्छे अखिरी कुजुड़ बि मुनुड़ खोल छतु।

सोबि केईंआ पेहले तेस इन्सान खुश करे, जेस तुस रोज शीशे अन्तर हेरते।

दोका मौका सिर्फ कथेईं देन्ती, जिन्दगी ना।

आगी बेलिए सुन्ना, दाने बेलिए धन, सहन-शक्ति बेलिए मन, त ईमानदारी बेलिए जिन्दगी साफ सथुरी बणती।

झूठ असु, छल असा, कपट असा, जंग असी, टकरार असी। सोचता रेहंता इहांणी कि एईंए मतोक भो ना।

लक्ष्य पुठ आधे बथ तकर घेई कइ वापस ना एण.....किस कि वापस एण जे बि आधी बथ पार करीण एन्ती।

कोठि असी बेरोजगारी-

सोब बोते आज कल असी बेरोजगारी,
नोखरी-चकरी त कोठि मेईण नेई
ईहांणि कटणी ऐण एन्ती उम्र सारी।
सोब बोते जड़ी मरा से यक स्यापा,
पढ़ी-लिख कइ फि सड़क नापे।
मठड़-मोटा कम कोई करण ना चाहंता,
मोउं बि भाई बाबू बणुण असु, हरेक जेईं बोता।
चोहरो कना जान मारी-मारी बि नौकरी न मेती,
इन्टरव्यू दी-दी कइ प्राण गड़े जे एई घेन्ते।
जपल मुख घेन्ता भाई चने खर्चा,
त फि भोई घेन्ता सोबी के बेड़ा गर्का।
छोटे-मोटे कम तुस सोब अपु हथे बइ करें,
खून-पसीने कमाई खा, कमे शर्म ना करें।
चंगा हल करे कोठियरी जिमेदरी,
मुकई छड़े देशे ढुक सारी।
चोहरो कना असु कम करण जे, करे सोब मड़द-जिल्हाणु,
फि बोले भाईओ मोउं जे, कि कोठि असी बेरोजगारी।

चुटकले

1- दुई कवि धाणि जुएली अपफ बुच बोकी लगो थिए।
जुएली- डियर अउं तें कविता भो।
धाणि- डियर अउं तें गजल भो।
गभुर- होर बोउआ, अस तुं आर्टिकल भो।

2- दुई मेह्णु हंठते-हंठते आमणी-समाणी एई गे।
यकी पुछु, "तोउ नउ कि असु?"
"घ घ घ घ घसीटा" तेन जवाब दुतु त साते पुछु "तोउ नउ कि असु?"
"असु त में नउ बि 'घसीटा' ईं, पर अउं ईं न घसीटता, जतु तु घसीटता।"

3- दुई दोस्त अपफ बुछ
"तें बेहिं दंत पड़ी लगो थी, पर तेईं किस पढि दंत भीं कीढ़वा?"
"अरे! से पड़ी पढि दंत पुठ खाखड़ बिश कइ बेहिं दंत खांतीथ ना। अब हेरते कोठि खड़ींती?"

सच्चाई खोज

बोक पहेलकण जवाने भुओ। यक ग्रां यक विधवा जिल्हाणु थी। केहि साल पेहले केसे भंयकर बिमारी बेलिए तसे धाणि मर गा। तेस जिल्हाणु यक कुआ थिया त से तेस अपु जान केईया बि ट्यारा थिआ। से जिल्हाणु सुआ गरीब भुणे वाबजुद बि अपु कोईए पालण-पोषण अब्बल तरीके जोई कतीथ। तसे कुआ अब्बल त केहणा मनणेबाड़ा थिया। तेस जिल्हाणु सोब उम्मीद अपु कुआ पुठ थी। यक रोज तसे कुआ बाहर खेलण जे गा त तठि यक जहेरीले कीड़े से डसा। जिखेईं जिल्हाणु पता लगा कि तसे कुआ कीड़े डसो असा त से सुआ डर गई। डर कइ से सुआ लियार-हुशेर देण लगी। तोउं से दौड़ दी कइ वैद केईं गई त वैद घिन आई। वैदे सुआ दवा दारु त झाड़-फूंक करणे बेलिए बि जिल्हाणु इकलौता कुआ बचाई न बटा। से जिल्हाणु सुआ दुखी त उदास भोई गई। तेन बचारी अपु कुआ जोई साते मरणे सोच छइ।

तोउं कनि जेईं एई कइ तेस जिल्हाणु जे बोलु कि भेएड़े यक ग्रां यक सधु बाबा आओ असा। तेस अन्तर अति शक्ति असी कि से मरो तेन्हि बि जीयाई सकता। से जिल्हाणु रोलते-रोलते तेस सधु बाबे केईं पुजी त अपु कोईए लाश तसे खुरी पुठ रख कइ तेस जीन्ता करणे लिए सधु बाबे छनेअरे करण लगी। तेस जिल्हाणु रोलणा-पीटणा हेर कइ सधु बाबा बि सुआ दुखी भोई गा। पर से भगवाने या प्रकृति नियम कीं बदली सकताथ। इए से जिल्हाणु रोल-रोल कइ बोलुण लगो थी कि तसे कुआ दुबारी जीन्ता न भुओल त से बि सधु बाबे खुरी पुठ अपु प्राण दी छती।

सधु बाबा खरा ज्ञानी थिया। तेन सधु बाबे मुस्कराई कइ बोलु "ईया, अउं तें कुआ जीन्ता त कइ छता, पर तोउ यक कम करुण एन्तु।" जिल्हाणु बोलु "महाराज, झठ बोले तुस जीं बोलियेल अउं तीं कती।" सधु बाबे बोलु "गा त कसे यक गी अन्तरा यक मुठड़ी शरोहु घिन आई। पर ईं गी अन्तरा आण्हुण कि जेठि कदी बि केसरी मौत न भुओ भोल।"

पेहला गी, दोका गी, पन्नझाह घर, सौउ घर, ग्रा-ग्रां हंठ कइ बि तेस जिल्हाणु ईं घर न मेईया कि जेठि कदी केसरी मौत न भुओ भोल। दन रात महीने-महीने हंठ कइ बि ईं घर न मेईया त से जिल्हाणु मरणे सच्चाई समझ गई। केहि रोजे बाद, से वापस सधु बाबे केईं आई त बाबे बोलु, "शरोहु घिन आई ना?"

जिल्हाणु सधु बाबे खुरी पुठ बिश गई त बोलुण लगी, "महाराज" मेईं शरोहु तोप ना बटा, पर मोउं जिन्दगी सच्चाई ज्ञान भोई गा। अब अउं तोउ जे अपु कुआ जीन्ता करणे न बोती।" पर सधु बाबे तसे कोईए लाश पहेलाई फुक छओ थी। यक बोक असी कि जीण या मरुण ओस मालिके हथ असु। एस अन्तर अस मनख किछ दखल अन्दाजी ना कइ सकते।

राजा बणणे शिक्षा

यक देश थिआ। तेस देश अन्तर राजा बणणे यक अनोखा रिवाज थिआ। तेठि कोई बि मेहणु राजा बण सकताथ। पर सद 3 साले लिए। तेस केईया पता, तेस देश केईया यक ईं एकांत जगाई जे लघांतेथ, जे चोहरो कनारा दरेउओ अन्तर भुन्ति। तठि तेन्हि पूरी उम्र अकेले कष्ट कर कइ जीण एंतुथ।

सुआ जेईं बोडे खुशी जोई राजा बणण जे एन्तेथ। से टाई साल बोड़ी मोजमस्ती कतेथ। पर टाई साल बाद, जिखेई तेन्के तेस राजगद्दी केईया घेणे टेम एन्ताथ त से ती दुखी भुन्तेथ त रोलतेथ। इस लिए कि से तेन्हि टाई साली अन्तर बोड़े खुशी जुएई त आराम जोई बिशो थिए। पर अभेईं केईया तेन्हि पूरी उम्र अकेले गरीबी अन्तर जीण एन्तु।

तेठि ककू नउए यक मेहणु बि आ, से सुआ गरीब थिआ। तेस केईं सऊ दी खाणे-पीणे समान नेओथ, किस कि तसे ई बोउ मठड़ियारी मर गो थिए। तेन्हि टेमी तुसी पताई त असा कि कीं गरीबी भुन्तीथ। तोउं तेन बि ईं शुणु कि नउआ राजा बणणे टेम एई गो असा, त से बि तेठि गा त राजा बणा।

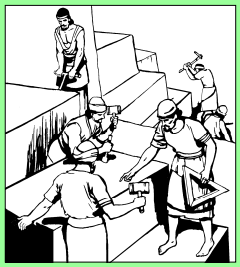

तेन्हि टाई साल अन्तर एन बचारे राज त किउ, पर तेन होरी राजी के ईं सिर्फ मौजमस्ती ना की। बल्कि तेन तेस राज्य अन्तर सुआ कम किए, जेसे बेलिए तसे पूरी टज खुश भुई। पर तेन यक कम होरा बि किया। तेन तेस एकांत जगाई अन्तर पहेलाई मेहणु लंघाई कइ घर त बग बधुई बणेई। तेस जगाई जे तेन पुड़ बि ला।

टाई साले बाद, जपल तेस राजे लंघाणे टेम आ त तेस किछ दुख ना भुआ। से बोडी खुशी जोई तेस जगाई जे गा, किस कि तेन तेस जगाई पहेलाई अपु घरवार बणाई रखो थिआ।

इस कथाई बेलि शिचणे बोक त ई असी कि तेस देशे राजे बणणे मौका ईं असी बि जीणे यके मौका मेता। सुआ जेईं तेन्हि होरी राजी के ईं मौजमस्ती अन्तर अपु-अपु पूरी जिन्दगी बीताई छते। सोबी पता असा कि असी बि यक रोज इ मतोक छड़ दी कइ घेण एन्तु, जीं से राज छड़ देन्तेथ। पर अस तसे लिए कदि कोई तेयारी ना कते। खरु भुन्तु कि अस इस जिन्दगी अन्तर एणेबाड़े जीवने तेयारी करे।

रुपेई

सोबी केईंआ पहेले अउं अपु परिचय दी छता।
अउं पैसा भो।
अउं लुणे ईं असा। जे जरुरी त असु, पर जरुरत केईंआ ज्यादा भोई गोऊ त जिन्दगी स्वाद बिगाड़ छतु। अउं भगवान न भो। तोउं बि मेह्णु मोउं भगवान केईंआ घट न समझते।
मोउं तुस मरण केईंआ पता अपफ जोई साते नी न सकते, पर जींते जी अउं तुसी सुआ खड़िया नी सकता।
अउं नोई-नोई रिश्तेदारी बणांता, पर असली त पुराणी बिगाड़ छता।
अउं किछ बि न भो, पर अउं पक्कु कता कि मेह्णु तुसी केती इज्जत देन्ते।
मोउं सिर्फ इस हद तकर पसन्द करे, कि मेह्णु तुसी ना पसन्द करण ना लगे।
अउं सोबी फसादी जड़ भो, पर फि बि ना जाणे किस सोब में पीछे अतो पागल भुन्ते।
अउं शैतान न भो, पर मेह्णु अक्सर में बझई जोई गुनाह कते।
अउं टेका मेह्णु न भुओ, पर में बझई जोई धाणि जुएली अपफ बुच झगड़ींते।
मेईं कदी कसेरी लिए बलिदान न दिता, पर केहि मेह्णु में लिए जान देण लगो असे।
अउं याद दियाण चाहांता कि अउं तुं लिए सोब किछ खरीद सकता। तुं लिए दवाई खरिद सकता। पर तुं उम्र न बधाई सकता।
यक रोज जपल भगवाने बुलाबा एईयाल त अउं तुसी जोई साते ना घेन्ता, बल्कि तुसी अपु पाप भुगतण जे अकेले छड़ देन्ता।
होर ए बकत कपले बि एई सकता।
तुसी अपु बणाणेवाड़े जे अपफ जबाव देण पड़तु, त तसे फैसला मनण एन्ता।
तेस टेम सर्व शाक्तिमान तुं फैसला कता, त में बारे पुछता। पर अउं तुसी केईंया अभेईं पुछता, कि तुसी जिन्दगी भर में सही इस्तेमाल किया ना या कि तुसी अउंए भगवान बणाई छड़ा।

यक अखीरी जानकारी में कनारा अउं "खड़ी" तुसी जोई साते ना घेन्ता, बल्कि तुं सत्कर्मी की धन-दौलतेईं तुसी जोई साते घेन्ती।

मतोक अन्तर तुसी केहि ईं उदाहरण मेईं घेन्ते, जन्हि केई अउं बेशुमार थिया। पर फि बि से मरे त तन्हि जे रोलणेवाड़ा कोई न थिया।
अउं यक लिंगि फि तुसी याद दियाई छऊ, कि अउं भगवान न भुओ। होर ऑ मोउं आजाद बिशणे आदत असी, मोउं मुनणु लाई कइ बन्न न रखे।

मंहगाई की घटाण

कदि जनता त कदि कांग्रेस आई।
कदि बेरोजगारी त कदि एन्ती मंहगाई।
ही जे बिकतुथ दुई रुपेई, आज से बिकतु सौ रुपेई।
जेस देश अन्तर सुन्ना चॉन्नी बरसतीथ,
आज अस हेरण जे तरसते।
वोट नेण केईया पेहले हौसला देन्ते,
जीत कइ फि नजरी ना एन्ते।
पन्ज साले बाद फि हक देन्ते,
वोट दिए अस मंहगाई घटांते।
फि से नजरी ना एन्ते, अस त सच्ची गल शुणांते।

हजारे लांते बुट, सुआ रखते अपु गी कुतर,
जे गेट टप कइ अन्तर घियाल
त चौहदा लाण एन्ती सुई।
आचले नेती के की बोके लाणी, जीन्ते रिहेल फि शुणांते,
ए त सोब दूर पार केईया एओ थी।
तुसी जे सच्ची बोक ना लाई।
जोंउ तकर जनसंख्या न घटियेल,
तोउं तकर मंहगाई ना मुखती।

तुबारि मासिक पत्रिका

♦अस इ उम्मिद करं लगो असे कि एण बाड़े रोज अन्तर सुआ मेह्णु इस कम अन्तर साथोट देन्ते।
♦इस *तुबारि* मासिक पत्रिका समाचार पत्र एक्ट अन्तर रिजिष्ट्रि नेई भो। सिर्फ पांगी घाटि अन्तर पढ़ूं जे त भाषाई सुहलियत करण जे इ पत्रिका शुरु किओ असी।
♦*तुबारि* यक अवाणिज्यिक पत्रिका भो।
♦*तुबारि* पत्रिका कोई मेह्णु, जनजाति, त संस्कृति गलती कढ़ेण जे नेई छपाण लगो। अगर कोई ईं सोचता बि त अस जिम्मेबार नेई।
♦छपाणे पेह्ले सोभ आर्टिकल दुई टाई पांगेई मेह्णु हरालो असे। इ त खुली बोक असी कि पेह्लि बार पांगवाड़ि लिखणे सुआ मुशकिल भुन्ति त गलती बि भुन्ति। अगर कोई लिखणे गलती असी त असी जे जरूर बोले। त अस तसे होरे संस्करण पुठ ठीक करणे कोशिश कते।
♦आर्टिकल्स ना मिएल, या घाटि मेह्णु के साथोट ना मिएल त *तुबारि* पत्रिका कदी बि बंद भुई सकती।
♦कोई चीज छपा असी या नेई छपां जे *तुबारि* संपादकीय टीमे पुरा अधिकार असा।
♦अस किलाड़ केन्द्रीय पुस्तकालय, त बजार हरिराम लाले दुकान अन्तर *तुबारि* ड्रॉप बॉक्स पुठ बि अपुं सझाव ओर अर्टिक्लस रखुं जे सुविधा किओ असी।
♦अस सोबी पांगी मेह्णु जे हात जोड़ कइ अनुरोध कते कि, तुस बि कोई अच्छा अर्टिक्ल, पुराणि या नोई कथा, कहावत, कविता, त नोई घीत (पागवाड़ी अन्तर) लिख कइ छपां जे हँघे दिए।

तुबारि संपादकीय टीम
9418431531
9418429574
9418329200
9418411199
9418904168
9459828290